International Journal of Sanskrit Research 2025; 11(2): 172-175

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2025; 11(2): 172-175
© 2025 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-02-2025
Accepted: 20-03-2025

डॉ. अमित कुमार पाण्डेय
सहायक अध्यापक,
PSSOU, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अमित कुमार पाण्डेय
सहायक अध्यापक,
PSSOU, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

संस्कृत भाषा का वैशिष्ट्य

डॉ. अमित कुमार पाण्डेय

प्रस्तावना

संस्कृत भाषा भारत की सांस्कृतिक चेतना की आत्मा है। इसकी उद्भव यात्रा वैदिक काल से प्रारंभ होकर आधुनिक काल तक विस्तृत है। संस्कृत केवल एक भाषा नहीं, अपितु एक विचार प्रणाली, ज्ञान प्रणाली, और सांस्कृतिक धरोहर की वाहिका है। वैदिक मंत्रों की दिव्यता, उपनिषदों की दार्शनिक गहराई, महाकाव्यों की वीरगाथाएँ, और नाटकों की भावनात्मक सघनता – ये सब इस भाषा की विलक्षण विशेषताओं के परिचायक हैं। इस शोध पत्र में संस्कृत भाषा की विविध विशेषताओं का शास्त्रीय दृष्टिकोण से विस्तृत विवेचन किया गया है।

1. ध्वनि वैज्ञानिकता और उच्चारण की शुद्धता

संस्कृत की वर्णमाला का वैज्ञानिक ढाँचा इसे अन्य भाषाओं से विलक्षण बनाता है। प्रत्येक ध्वनि का उच्चारण एक विशेष स्थान से जुड़ा होता है - जैसे कंठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य और ओष्ठ्य।

"षट्स्थानानि वर्णानां, व्यञ्जनानां विशेषतः।
कंठ तालु च मूर्धा च, दन्तौष्ठौ च सञ्ज्ञिताः॥"

यह व्यवस्था ध्वनियों की शुद्धता और स्पष्टता को सुनिश्चित करती है। इसका परिणाम यह होता है कि संस्कृत भाषा में उच्चारण की शुद्धता अत्यंत महत्वपूर्ण है।संस्कृत भाषा में उच्चारण (उच्चारणशुद्धिः) का अत्यधिक महत्व है, क्योंकि यह भाषा ध्वनि-आधारित (phonetic) और ध्वनि-विज्ञान पर आधारित है। संस्कृत में प्रत्येक अक्षर का निश्चित उच्चारण स्थान (उच्चारणस्थान) और उच्चारण विधि (उच्चारणविधिः) होती है। सही उच्चारण से ही अर्थ की शुद्धता और प्रभाव प्रकट होता है। आइए इसके महत्व को विभिन्न दृष्टियों से समझते हैं।

ध्वनि और अर्थ का सम्बन्ध

संस्कृत में ध्वनि और अर्थ में सीधा सम्बन्ध होता है। उच्चारण में थोड़ी सी त्रुटि अर्थ को पूरी तरह बदल सकती है।उदाहरणःवध (हत्या) और वन्द्य (पूज्य) – दोनों में स्वर का अंतर अर्थ में विशाल भेद उत्पन्न करता है।स्वधा, स्वाहा, स्वस्ति – यज्ञीय कर्मों में इनका उच्चारण यदि त्रुटिपूर्ण हो जाए तो कर्म दोषयुक्त माना जाता है|

वैदिक मंत्रों में उच्चारण की अनिवार्यता

वैदिक भाषा में, विशेषतः ऋचाओं के पठन में स्वर (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित) का विशेष ध्यान रखा जाता है। यदि स्वर भंग हो जाए तो ऋचा का फल नष्ट हो सकता है।

"स्वरतो वर्णतो वा दोषो यत्र न विद्यते।
तं मन्त्रं ब्राह्मणा नित्यं यज्ञेषु परिशंसति॥"

जहाँ न स्वर में दोष हो और न वर्ण में, वही मंत्र ब्राह्मण यज्ञों में प्रयोग करते हैं।
संस्कृत भाषा में उच्चारण केवल बोलने का माध्यम नहीं, बल्कि भाषा की आत्मा है। उच्चारण की शुद्धता से ही भाषा की गरिमा, अर्थ की स्पष्टता, और भाव की अभिव्यक्ति संभव होती है। इसलिए संस्कृत में कहा गया है:

"शुद्धोच्चारणयुक्तं वाक्यं, सौन्दर्यं जनयत्यसौ।
वाक्ये दोषो यदि भवेत्, तदर्थः पतितो भवेत्॥"

2. व्याकरण की वैज्ञानिकता और तार्किकता

पाणिनि द्वारा रचित अष्टाध्यायी संसार की प्रथम औपचारिक व्याकरण प्रणाली मानी जाती है। इसमें ३९५९ सूत्रों द्वारा सम्पूर्ण भाषा का नियमन किया गया है। यह नियम कंप्यूटर एल्गोरिद्म के समतुल्य माने जाते हैं।

"व्याकरणं व्यासकृतं, पाणिनीयं महाश्रुतम्।
सूत्रलघुं विस्तृतार्थं, भाषायाः मूलमित्यतः॥"

पाणिनि की शैली अत्यंत संक्षिप्त, परंतु गहन है। यह आधुनिक भाषा विज्ञान के लिए प्रेरणास्रोत है।

3. शब्दसामर्थ्य और व्युत्पत्तियुक्त संरचना

संस्कृत भाषा में शब्द धातुओं से उत्पन्न होते हैं, जो किसी कार्य के भाव या क्रिया को सूचित करते हैं। प्रत्येक धातु से अनेक शब्द बन सकते हैं। उदाहरणतः "स्था" धातु से स्थान, स्थित, स्थापना, संस्थान आदि शब्द बनते हैं।

"धातुभ्यः जायते शब्दः, प्रत्ययानां संयुतः।
विस्तरं भाषया प्राप्तं, संस्कृतेः शक्तिरद्भुता॥"

यह व्युत्पत्ति आधारित प्रणाली भाषा को लचीला और रचनात्मक बनाती है।

4. काव्य की भाषा

संस्कृत साहित्य का सर्वाधिक समृद्ध क्षेत्र काव्य है। संस्कृत काव्य में रस, छंद, अलंकार की प्रणाली अत्यंत विकसित है।संस्कृत काव्य भारतीय साहित्य की अनुपम धरोहर है, जिसमें भावनाओं की कोमलता, विचारों की गहराई, और सौन्दर्य की अनुभूति समाहित है। इसमें रस, अलंकार, छन्द और ध्वनि का विलक्षण समन्वय मिलता है। कालिदास, भास, माघ, भवभूति जैसे कवियों ने प्रकृति, प्रेम, नीति और धर्म को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया। संस्कृत काव्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, अपितु आत्मिक और बौद्धिक विकास का स्रोत भी है। यह भाषा, विचार और संस्कृति को जोड़ता है, और जीवन के विविध पक्षों को सुंदर ढंग से प्रकट करता है।

"रसाश्रया काव्यकला, छन्दसा ललिता सदा।
अलंकारैः समायुक्ता, संस्कृतेः काव्यशोभिता॥"

5. नाट्य और रंगमंच की भाषा

भरतमुनि का नाट्यशास्त्र विश्व की सबसे प्राचीन नाट्य प्रणाली का ग्रंथ है। संस्कृत नाट्य में संवाद,

भाव, अभिनय की विस्तृत व्याख्या मिलती है।

"नाट्यं भिन्नरसं दृष्ट्वा, संस्कृतेन सुभाषितम्।
सर्वभाषा विजित्यैव, शास्त्रेष्वेकं प्रतिष्ठितम्॥"

संस्कृत नाट्य भारतीय रंगमंच की प्राचीन और समृद्ध परंपरा का दर्पण है। भास, कालिदास, भवभूति, श्रीहर्ष आदि महान नाटककारों ने सामाजिक, दार्शनिक और धार्मिक विषयों पर आधारित श्रेष्ठ नाटक रचे। संस्कृत नाटकों में नवरस की अभिव्यक्ति अत्यंत प्रभावशाली होती है। इनमें जीवन के विविध आयामों को कलात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है। संस्कृत नाट्य न केवल मनोरंजन का साधन, बल्कि शिक्षा और संस्कृति का वाहक भी है।

6. धार्मिक और दार्शनिक साहित्य की भाषा

वेद, उपनिषद, स्मृतियाँ, आरण्यक, गीता, ब्राह्मण ग्रंथ आदि सभी संस्कृत में रचित हैं। इनमें धर्म, योग, वेदान्त, कर्म, ज्ञान, भक्ति, आदि सिद्धांतों की गहन विवेचना की गई है।

"वेदोपनिषदां भाषा, धर्मस्य मूलकारणम्।
योगज्ञानविचारार्थं, संस्कृतं योग्यमुच्यते॥"

7. चिकित्सा, गणित, खगोल और वास्तु की भाषा

चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता, आर्यभटीय, लीलावती, बृहज्जातक जैसे ग्रंथ संस्कृत में ही लिखे गए हैं।

"चिकित्सायां गणिते च, वास्तुविद्यायां तथैव च।
संस्कृतं प्रमुखं साधनं, विज्ञानार्थं निरन्तरम्॥"

8. भाषिक स्थिरता और कालातीतता

संस्कृत का स्वरूप सहस्त्राब्दियों से अपरिवर्तित रहा है। वैदिक मंत्र, उपनिषदों की वाणी आज भी उसी रूप में प्रयोग होती है।

"न विकारं गतं भाषायाः, यदा युगानि यान्ति च।
सा संस्कृतं सदा शुद्धा, कालातीतं निरन्तरम्॥"

9. संस्कृत का विश्व व्यापी प्रभाव

सिन्धु सभ्यता से लेकर इंडोनेशिया तक और भारत से यूरोप तक, संस्कृत भाषा का प्रभाव व्यापक रहा है।

"यत्र यत्र च संस्कारः, धर्मो वा ज्ञानगम्यते।
तत्र तत्रैव भाषायां, संस्कृतेः तेज ऐश्वर्यम्॥"

10. आधुनिक युग में संस्कृत का पुनरुद्धार

भारत सरकार और विभिन्न संस्थानों द्वारा संस्कृत के संवर्धन के प्रयास चल रहे हैं। संस्कृत भारती, इत्यादि संस्थाएँ मौखिक संस्कृत के लिए प्रयासरत हैं।

"संस्कृतं जीवयेमेतत्, भाषां चेतनरूपिणीम्।
यथा भारतसंस्कारः, स्थाप्यते विश्वमण्डले॥"

11. तकनीकी उपयोग और कंप्यूटर के क्षेत्र में भूमिका

संस्कृत की संरचना स्पष्ट और त्रुटिरहित होने के कारण यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भाषा प्रसंस्करण में उपयोगी सिद्ध हो रही है।संस्कृत भाषा तकनीकी दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक, संरचित और नियमबद्ध है। इसकी व्याकरणिक स्पष्टता और ध्वनि-संगति इसे कंप्यूटर प्रोग्रामिंग तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लिए उपयुक्त बनाती है। अमेरिकी वैज्ञानिकों और कंप्यूटर विशेषज्ञों ने भी संस्कृत को "सर्वाधिक उपयुक्त भाषा" माना है, विशेषकर प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) में। संस्कृत के व्याकरण को पाणिनि के अष्टाध्यायी ने सूत्रबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया है, जो आज भी आधुनिक कंप्यूटेशनल भाषाविज्ञान के लिए आदर्श है। तकनीकी युग में संस्कृत की संरचना और तार्किकता इसे एक संभावनाशील भाषा बनाती है।

"सूक्ष्मतत्त्वनिबद्धा या, गणनायाः समर्थिका।
सा संस्कृतं सदा ग्राह्या, यंत्रेभ्यः शुद्धवाक्यता॥"

12. संस्कृत शिक्षण और भविष्य की दिशा

संस्कृत शिक्षण में न केवल व्याकरण बल्कि योग, आयुर्वेद, दर्शन और नीति शास्त्र भी सम्मिलित हैं। इसके द्वारा छात्रों में तर्कशक्ति, मनोबल और मूल्यपरक चेतना का विकास होता है।

"शास्त्रविचारयुक्तानां, भाषायां चेतना भवेत्।
संस्कृतं शिक्षयेत् सर्वं, लोकहिताय शाश्वतम्॥"

निष्कर्ष

संस्कृत भाषा केवल अतीत की अमूल्य धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक सशक्त साधन है। यह भाषा विज्ञान, तर्क, भाव, कला, आचार और व्यवहार की पूर्ण अभिव्यक्ति है। इसकी वैज्ञानिकता, स्थायित्व, सौंदर्य और दार्शनिक गहराई इसे एक अद्वितीय भाषा बनाती है।

"संस्कृतं जननी भाषां, वेदविद्यायाः स्रोतसा।
संवर्धनीया सा सर्वैः, चेतनायै सदा शुभा॥"

संस्कृत भाषा आज भी अपने वैज्ञानिक स्वरूप, सांस्कृतिक गहराई और दार्शनिक व्यापकता के कारण अत्यंत प्रासंगिक है। यह न केवल भारत की प्राचीन सभ्यता का आधार है, बल्कि योग, आयुर्वेद, ज्योतिष और दर्शन जैसे क्षेत्रों की मूल भाषा भी है। संस्कृत के ग्रंथों में जीवन, धर्म, नीति और विज्ञान का अमूल्य भंडार सुरक्षित है। तकनीकी युग में भी संस्कृत की व्याकरणिक संरचना कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और संगणक भाषा (Computational Linguistics) में सहायक मानी जाती है। अतः संस्कृत न केवल अतीत की भाषा है, अपितु भविष्य की संभावनाओं से युक्त एक जीवंत धरोहर भी है।

संदर्भ सूची

1. संस्कृत भाषाशास्त्र – डॉ. बालदेव उपाध्याय
2. पतंजलि – महाभाष्य
3. कालिदास – रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्
4. भरतमुनि – नाट्यशास्त्र
5. सुश्रुत – सुश्रुतसंहिता
6. आर्यभट – आर्यभटीय
7. संस्कृत भाषा का वैज्ञानिक स्वरूप – डॉ. भगवतीप्रसाद शर्मा
8. Rick Briggs – Knowledge Representation in Sanskrit (NASA)
9. डॉ. कपिल कपूर – संस्कृत भाषा और विचार परंपरा
10. वेद, उपनिषद, भगवद्गीता – मूल ग्रंथ
11. भारतीय संस्कृति और संस्कृत – डॉ. सत्यव्रत शास्त्री